066

MAHD-01

December - Examination 2016

MA (Previous) Hindi Examination

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Paper - MAHD-01

Time : 3 Hours] **[Max. Marks :- 80**

निर्देश : प्रश्न पत्र खण्ड अ, ब, स में विभाजित है। प्रश्नों के उत्तर खण्ड में दिए गए निर्देशानुसार दीजिए।

खण्ड – 'अ' **$8 \times 2 = 16$**

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं। आप अपने उत्तर को एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम 30 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है –

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(i) 'रामलला नहछू' खण्डकाव्य के रचनाकार कवि कौन हैं?

(ii) सूफी साधना में 'मारिफत' से क्या तात्पर्य है?

(iii) ''नहिं – परागु नहिं मधुर रस नहिं विकास इहि काल। अली कली ही सौं बध्यौ, आगे कौन हवाल।।'' उक्त दोहे के रचयिता कौन हैं?

(iv) धनानन्द कवि की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।

(v) भक्तिकाल के किन्हीं दो कवियों का उनकी रचना के साथ नामोल्लेख कीजिए।

(vi) इन्द्र जिमि जंभ पर, बाड़व सुअंब पर रावन सदंभ पर रघुकुल राज है।''
उक्त पंक्तियों में कौनसा अलंकार है?

(vii) पद्माकर के पदों में अभिव्यक्त कच्छप की अन्तर्कथा' को संक्षेप में लिखिए।

(viii) तुलसीदास के काव्य – सृजन के समय तत्कालीन सामाजिक स्थिति किस प्रकार की थी?

(खण्ड – ब) **4 × 8 = 32**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : निम्न लिखित प्रश्नों में से कोई चार प्रश्न कीजिए। शब्द सीमा लगभग 200 शब्द है। प्रत्येक प्रश्न 8 अंकों का है।

2) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

साधो भाई, जीवन करो आसा।
जीवन समझे जीवत बूझे, जीवन मुक्ति निवासा।।
जीवन मरन की फाँसन काटी, मुये मुक्ति की आसा।।
तन छूटे जिव मिलन कहत है, सो सब झूठी आसा।।
अबहूँ मिला तो तबहूँ मिलेगा, नहिं तो जमपुर बासा।।
सन्त गरे सतगुरू को चीन्हें, सन्त नाम विस्वासा।।
कहै कबीर साधन हितकारी, हम साधन के दासा।।

3) निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

''कातिक सरद चंद उजियारी। जग सीतल, हौं बिरहै जारी।।
चौदह करा चाँद परगासा। जनहुँ जरै सब धरति अकासा।।
तन मन सेज करै अगिदाहू। सब कहु चंद, भयउ मोहि राहू।।
यहूँ खंड लागै मोहि अंधियारा। जौं घर नाहीं कंत पियारा।।

अबहुँ निठुर! आउ एहिबारा। परब देवारी होई संसारा।।
सखि झूमक गावै अँग मोरी। हौं झुरावँ बिछुरी मोरिजोरी।।
जेहि घर पिउ सो मनोरथ पूजा। मो कह बिरह, सवति – दुख दूजा।।
सखि मानैं हिउहार सब, गाइ देवारी खेलि।
हौं का गावौं कंत बिनु, रही छार सिर मेलि।।

4) निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
''अँखिया हरि – दरसन की भूखी।
कैसे रहें रूपरस राची, ये बतियाँ सुन रूखी।।
अवधि गनत इकटक मग जोवत तब ऐती नहिं झूखी।
अब इन जोग– संदेसन ऊधो अति अकुलानी दूखी।।
बारक वह मुख केरि दिखाओ, दुहि पय पीवत पतूखी।।
सूर सिकत हठि नाव चलायो, ये सरिता है सूखी।

5) निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
म्हाँ गिरधर आगाँ, आगाँ नाच्यारी।।
णाच णाच म्हाँ रसिक रिझावाँ, प्रीत पुरातन जाँच्या री।
स्याम प्रीत री बाँध घुँघरयाँ, मोहण म्हारो साँच्यारी।।
लोक लाज कुल रा मरजादाँ, जगमाँ णेक णा राख्यौरी।
प्रीतम पाल छण णा बिसरावाँ, मीरा हरि रंग राच्याँरी।।

6) तुलसीदास जी के काव्य में लोक समन्वय – भावना को स्पष्ट कीजिए।

7) रीतिकाल की तीन काव्यधाराओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

8) पृथ्वीराज रासो में कथानक रूढ़ियाँ किस प्रकार अभिव्यक्त हुई हैं? समझाइए।

9) विद्यापति के काव्य में प्रकृति चित्रण को स्पष्ट कीजिए।

(खण्ड – स) $2 \times 16 = 32$

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर अधिकतम 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 16 अंकों का है।

10) 'पद्मावत' के आधार जायसी के काव्य – सौन्दर्य का विवेचन कीजिए।

11) कबीर की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

12) ''सूरदास का सम्पूर्ण काव्य भाव–राशि का एक विशाल महासागर है।'' इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

13) सिद्ध कीजिए कि ''कवि भूषण लोक से हटकर एक आदर्श कवि थे।''